देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

नवम्बर 2024

Vol.-20, Issue-5(1)

Impact Factor
7.523

# Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

## वैश्वीकरण के दौर में बदलती सामाजिक व्यवस्था

Guru Nanak Girls College
Sant Pura, Yamuna Nagar

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. गीतू खन्ना,
डॉ. अमनदीप कौर

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग
एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

Scanned with OKEN Scanner

## अनुक्रमाणिका – नवम्बर 2024


| क्र. | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1. | सम्पादकीय | डॉ. गीतू खन्ना, डॉ. अमनदीप कौर | 11-11 |
| 2. | शुभकामना संदेश | | 12-15 |
| 3. | हिन्दी साहित्य में नारी चित्रण | डॉ. गीतू खन्ना | 16-22 |
| 4. | वैश्वीकरण के दौर में भारतीय शिक्षा संस्कृति और साहित्य | डॉ. शक्ति बुद्धिराजा | 23-27 |
| 5. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित परिवर्तित होता पारिवारिक ढांचा | डॉ. अंजू बाला | 28-35 |
| 6. | वैश्वीकरण का अवधारणात्मक विकास व महिला सशक्तिकरण | संदीप कौर | 36-39 |
| 7. | वैश्वीकरण के दौर में विखंडित होते जीवन और मानवीय मूल्य : हिन्दी उपन्यासों के सन्दर्भ में | डॉ. अमनदीप कौर | 40-45 |
| 8. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था | मिस दीपमाला | 46-50 |
| 9. | वैश्वीकरणसमये वेदनिहितसामाजिकसिद्धान्तविचारः | अजित कुमार नायक | 51-54 |
| 10. | साहित्य में वैश्वीकरण का प्रभाव : शरद जोशी और रवींद्रनाथ त्यागी के व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण का विश्लेषण | अर्चना बारस्कर | 55-60 |
| 11. | वैश्वीकरण के दौर में विखण्डित होते जीवन मूल्य 'गिलिगडु' उपन्यास के संदर्भ में | बीना मीणा | 61-64 |
| 12. | वैश्वीकरण के दौर में दिविक रमेश के बाल कथा साहित्य में चित्रित बाल समस्याएं | दीपिका चौहान, डॉ. रीता सिंह | 65-69 |
| 13. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था | धीरेंद्र प्रताप सिंह गौर | 70-76 |
| 14. | The Impact of Technology on Mental Health of Young Adults : A Systematic Review | Ms. Divya Rathi, Dr. Nirupma Saini, Dr. Vandana Singh | 77-84 |
| 15. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था | डॉ आदित्य प्रकाश | 85-89 |
| 16. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था | डॉ. अमिता रेहू | 90-97 |
| 17. | भूमण्डलीकरण और हिन्दी भाषा | डॉ० चन्द्रा खत्री, डॉ० आशा हर्बोला | 98-100 |




Scanned with OKEN Scanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| 18. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित दलित उद्भावना | डॉ. दलीप कुमार | 101–107 |
| 19. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित नारी की दशा | डॉ. दीप्ति | 108–112 |
| 20. | वैश्वीकरण के दौर में स्त्री विमर्श और स्त्री लेखन : समकालीन हिंदी कथा साहित्य के संदर्भ में अध्ययन | डॉ. गोपीराम शर्मा | 113–119 |
| 21. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित नारी की दशा | डॉ. गुरमीत कौर | 120–121 |
| 22. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित प्रवास का दर्द | डॉ. जैस्मीन पटनायक | 122–128 |
| 23. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में नारी की दशा | डॉ. ममता कुंवर | 129–134 |
| 24. | वैश्वीकरण एवं जनजातीय कल्याण | डॉ.(श्रीमती)मंजुलता कश्यप | 135–139 |
| 25. | Effect of Globalization on Sports in India | Dr. Meenakshi Gupta | 140-143 |
| 26. | वैश्वीकरण और मूल्य-विघटन की कहानी : साहित्य की जुबानी | डॉ. मीनू नन्दा | 144–150 |
| 27. | वैश्वीकरण के दौर में बदलती सामाजिक व्यवस्था | डॉ. नरेश कुमार | 151–157 |
| 28. | वैश्वीकरण के दौर में बदलती सामाजिक व्यवस्था | डॉ. पूजा शर्मा | 158–163 |
| 29. | वैश्वीकरण के दौर में वैदिक साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था | डॉ. पुष्पा शर्मा | 164–167 |
| 30. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित समरसता | Dr. R. Kavita | 168-172 |
| 31. | वैश्वीकरण के दौर में सामाजिक समरसता | डॉ. राजश्री लक्ष्मण तावरे | 173–176 |
| 32. | आधुनिक काल में बदलते नारी स्वरूप का चित्रण : कोमल गांधार | डॉ. सिम्मी सिंह | 177–181 |
| 33. | वैश्वीकरण के दौर में हिंदी कहानियों में नारी की दशा | डॉ. सुनीता देवी | 182–184 |
| 34. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित नारी की दशा | डॉ. सुरेन्द्र कुमार | 185–187 |
| 35. | चित्रा मुद्गल की कहानियों में दरकते परिवार | डॉ. सुषमा ठाकुर | 188–193 |
| 36. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित, परिवर्तित होता पारिवारिक ढाँचा (रामदरश मिश्र के उपन्यासों के संदर्भ में) | डॉ० यज्ञेश कुमार | 194–199 |
| 37. | आर्थिक परिदृश्य में वैश्वीकरण के दबाव में युवाओं पर प्रभाव | डॉ. गीता सराफ | 200–205 |
| 38. | वैश्विक समय और समकालीन हिंदी कविता में जीवन मूल्य | डॉ. प्रिया ए. | 206–211 |
| 39. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में दलित विमर्श | कोमल | 212–215 |
| 40. | वैश्वीकरण का प्रभाव और 'पीली छतरी वाली लड़की' में चित्रित विश्वविद्यालय परिसर | कुलसूम | 216–222 |
| 41. | वैश्वीकरण के दौर में उषा प्रियंवदा की कहानियों में विखंडित होते जीवन और मानवीय मूल्य | मोनिका चौहान, डॉ. रीता सिंह | 223–227 |




Scanned with OKEN Scanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| 42. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित विखण्डित होते जीवन मूल्य | मोनिका तालियान | 228-234 |
| 43. | पं० लखमीचंद और पं० जगन्नाथ के लोक साहित्य में नारी सौंदर्य | नविता, डॉ. शर्मिला | 235-238 |
| 44. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित दलित उद्भावना | निशिम नागर | 239-242 |
| 45. | वैश्वीकरणसमये गीतानिष्ठसमाजतत्त्वविचारः | ओमप्रकाशदासः | 243-246 |
| 46. | वैश्वीकरण का हाशिये पर स्थित दलित नारी पर प्रभाव | प्रदीप कुमार | 247-251 |
| 47. | वैश्वीकरण के दौर में बदलता ग्रामीण जीवन | पवन कुमारी | 252-256 |
| 48. | भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त नौकरी और तनाव का अंतर्संबंध | प्रदुन कुमार | 257-261 |
| 49. | भगवानदास मोरवाल के उपन्यास 'शकुंतिका' में नारी चेतना | प्रेमलता | 262-266 |
| 50. | वैश्वीकरण के दौर में राजनैतिक मूल्यों का विघटन : महाभोज उपन्यास के सन्दर्भ में | रंजीता मिर्धा | 267-271 |
| 51. | वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी कहानियों में चित्रित आदिवासी नारी जीवन | रीता देवी, डॉ. पिंकी पारीक | 272-276 |
| 52. | वैश्वीकरण के दौर में स्त्री-कविता का उद्भव | समीक्षा दुबे | 277-281 |
| 53. | वैश्वीकरण के दौर में दलित साहित्य | संगीता देवी | 282-287 |
| 54. | वैश्वीकरण के दौर में हिंदी के विकास में अनुवाद की भूमिका | सतीश कुमार भारद्वाज | 288-292 |
| 55. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित विखण्डित होते जीवन मूल्य | शालिनी पाण्डेय | 293-301 |
| 56. | Globalization & Gender Inequality in Employment | Shammi Bajaj | 302-307 |
| 57. | वैश्वीकरण का महिलाओं पर प्रभाव | शिवानी शर्मा | 308-310 |
| 58. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित परिवर्तित होता पारिवारिक ढांचा | सुभाष चन्द | 311-315 |
| 59. | उदय प्रकाश की कहानियों में उत्तर आधुनिकता | सुशील कुमार | 316-320 |
| 60. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित नारी की दशा | श्रीमती ऊषा देवी | 321-326 |
| 61. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित नारी की दशा | Vikesh Bala | 327-329 |
| 62. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था | विशाखा | 330-334 |
| 63. | गिरिराज शरण अग्रवाल के व्यंग्यों में चित्रित भ्रष्टाचार की समस्या | विशाल कुमार, प्रोफेसर (डॉ.) माया मलिक | 335-340 |




Scanned with OKEN Scanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| 64. | ਵਿਸਵੀਕਰਨ ਦੇ ਦੌਰ ਵਿਚ ਗੁਰਦਿਆਲ ਸਿੰਘ ਦੇ ਨਾਵਲਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਸੰਗਿਕਤਾ | ਡਾ. ਗੁਰਜਿੰਦਰ ਕੌਰ | 341-345 |
| 65. | ਸਮਕਾਲੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚ ਤਿੜਕਦੇ ਅਹਿਸਾਸਾਂ ਦੀ ਪੀੜ ਦਾ ਬਿਆਨ | ਡਾ. ਸੁਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ ਕੰਵਲ | 346-350 |
| 66. | साहित्य में नारी | डॉ. कर्मजीत कौर | 351-354 |
| 67. | वैश्वीकरण के दौर में स्त्री-मुक्ति के प्रश्न (विशेष संदर्भ : चित्रा मुद्गल के उपन्यास) | डॉ. अंजना नायक | 355-359 |
| 68. | ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਵਿੱਚ ਦਲਿਤ ਵਰਗ ਦੀ ਪਛਾਣ | ਸਹਾਇਕਪ੍ਰੋਫੈਸਰਯੋਗਿਤਾ ਚੰਦੇਲ | 360-367 |
| 69. | ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਣ ਦੇ ਸੰਦਰਭ ਵਿੱਚ ਸੰਤ ਬਾਣੀਮਹੱਤਵ | ਸੁਨੀਲ ਕੁਮਾਰ ਨਾਗਰਾ | 368-373 |
| 70. | सामाजिक चेतना के पोषक : मुनिश्री तरुणसागर | डॉ. अनुभा जैन | 374-377 |
| 71. | ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੇ ਦੌਰ ਵਿਚ ਆਂਚਲਿਕਤਾ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਦਾ ਨਾਵਲ 'ਅੱਧ ਚਾਨਣੀ ਰਾਤ' | ਸਤਵੀਰ ਕੌਰ | 378-384 |
| 72. | वैश्विक परिदृश्य में आंचलिक उपन्यासों का मूल्यांकन | डॉ. लक्ष्मी गुप्ता | 385-388 |
| 73. | वैश्वीकरण और हिन्दी उपन्यास साहित्य में अन्तर्सम्बन्ध | डॉ. धीरेन्द्र सिंह थापा | 389-392 |
| 74. | वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी साहित्य में चित्रित नारी की दशा | श्रीमती प्रेमलता पाटिल | 393-398 |
| 75. | वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित प्रवास का दर्द | डॉ. प्रवीण कटारिया | 399-403 |
| 76. | ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੇ ਸੰਦਰਭ ਵਿੱਚ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ | ਹਰਜੀਤ ਕੌਰ | 404-410 |
| 77. | ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੇ ਦੌਰ ਵਿੱਚ ਸਮਾਜਿਕ ਬਦਲਾਅ | ਨੀਤੂ ਸ਼ਰਮਾ | 411-416 |





Scanned with OKEN Scanner

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
Nov. 2024

ISSN : 2395-7115
Page No. : 346-350

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

# ਸਮਕਾਲੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚ ਤਿੜਕਦੇ ਅਹਿਸਾਸਾਂ ਦੀ ਪੀੜ ਦਾ ਬਿਆਨ

**ਡਾ. ਸੁਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ ਕੰਵਲ**

ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ, ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ, ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਗਰਲਜ ਕਾਲਜ, ਯਮੁਨਾਨਗਰ।

**ਉਡੀਕ ਹੈ ਮੇਰੇ ਆਪੇ ਨੂੰ,**
**ਮੇਰੇ ਪਰਤ ਆਉਣ ਦੀ**
**ਮਿਲਦਾ ਕਦੋਂ ਹੈ ਬੰਦੇ ਨੂੰ**
**ਭਟਕਣਾ ਦੇ ਸਫ਼ਰ ਦਾ 'ਯੂ-ਟਰਨ'**

ਪੰਜਾਬੀ ਦੀ ਸਮਕਾਲੀ ਕਵਿਤਾ, ਖਾਸ ਕਰਕੇ, ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਣ ਦੇ ਪਾਸਾਰ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੇ ਵਿਭਿੰਨ ਪ੍ਰਵਚਨਾਂ ਨੂੰ ਅਜਿਹੀ ਸਹਿਜ ਪ੍ਰਤੀਰੋਧਕ ਅਤੇ ਵਿਅੰਗਮਈ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਨਾਲ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਵਰਤਮਾਨ ਯਥਾਰਥ ਵਿਚ ਘਿਰਿਆ ਬੰਦਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਲਘੂ, ਨਿਗੂਣਾ, ਘਟੀਆ ਅਤੇ ਘੋਖ ਲਾਇਆ ਹੋਇਆ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਬੰਦੇ ਦੀ ਵਰਤਮਾਨ ਪ੍ਰਸਿਥਤੀ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰਨ ਦਾ ਇਹ ਕਾਵਿ ਪ੍ਰਵਚਨ ਸੱਤਾ ਵੱਲੋਂ ਬੇਜਾਨ ਕੀਤੇ ਜਾ ਰਹੇ ਬੰਦੇ ਦਾ ਪ੍ਰਵਚਨ ਹੈ।

ਸਮਕਾਲੀ ਕਵਿਤਾ ਮੌਲਿਕ, ਵਿਲੱਖਣ ਅਤੇ ਸਹਿਜ ਵਿਅੰਗ ਨਾਲ ਜੁੜਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚਲਾ ਵਿਅੰਗ ਐਨਾ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਨਵੇਂ ਬਣ ਰਹੇ ਸਾਧਨ ਸੰਪੰਨ ਮਧਵਰਗੀ ਬੁੱਧੀਜੀਵੀ ਦੀ ਵਿਖੰਡਿਤ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਦੇ ਨਵੇਂ ਪ੍ਰਸੰਗਾਂ ਨੂੰ ਪਾਠਕਾਂ ਸਾਹਮਣੇ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ, ਸਵੀ, ਅਜਮੇਰ ਰੋਡੇ, ਅਮਰਜੀਤ ਚੰਦਨ, ਜਸਵੰਤ ਦੀਦ ਜਿਹੇ ਕਵੀਆਂ ਨੇ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਆਂਤਰਿਕ ਜਗਤ ਨੂੰ ਬੜੇ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਢੰਗ ਨਾਲ ਪ੍ਰਗਟਾਇਆ ਹੈ। ਆਧੁਨਿਕ ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੀ ਮੰਡੀ ਵਿਚ ਸਾਹ ਲੈ ਰਿਹਾ ਅੱਜ ਦਾ ਮਨੁੱਖ ਬਾਹਰੋ ਸਿਆਣਾ, ਦਾਨਾ, ਪੜ੍ਹਿਆ ਲਿਖਿਆ, ਸਫ਼ਲ ਅਤੇ ਸੰਵੇਦਨਸ਼ੀਲ ਹੋਣ ਦਾ ਭਰਮ ਸਿਰਜਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਅੰਦਰੋਂ ਇਹ ਮਨੁੱਖ ਕਈ ਜ਼ਿੰਦਗੀਆਂ ਜੀਅ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਬਿਨਾਂ ਸ਼ਕ ਇਹ ਮਨੁੱਖ ਪੰਜਾਬੀ ਸਮਾਜ ਦੀ ਇਤਿਹਾਸਕ ਅਤੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤਿਕ ਰਹਿਤਲ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਨਹੀ ਸਗੋਂ ਪਿਛਲੇ ਦੋ ਦਹਾਕਿਆਂ ਦੀ ਵਿਸ਼ਵੀ ਸੋਚ ਦਾ ਮਨੁੱਖ ਹੈ। ਪਿੰਡ ਤੋਂ ਸ਼ਹਿਰ ਪਰਵਾਸ ਕਰਕੇ ਗਏ ਇਸ 'ਸਫ਼ਲ' ਬੰਦੇ ਲਈ ਆਪਣੀ 'ਸ੍ਵੈ' ਐਨੀ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਸਮਾਜਿਕ ਵਿਹਾਰ ਦਾ ਨਿਭਾਅ ਵੀ ਆਪਣੀ ਹਉਮੈ ਨੂੰ ਪੱਠੇ ਪਾਉਣ ਲਈ ਕਰਦਾ ਹੈ-

ਦੇ ਆਵਾਂਗਾ ਕੁੱਝ ਪੈਸੇ
ਦਾਦੀ ਨੂੰ
ਅਸੀਸ ਖਾਤਰ, ਰੋਅਬ ਖਾਤਰ
..........................................
ਗੁਰਦੁਆਰੇ ਨੂੰ ਕੁੱਝ ਪੈਸੇ,

ਪਾਪ ਹਰਨ ਖਾਤਰ
ਕੁਝ ਹੋਰ ਉੱਚਾ ਹੋਣ ਦੀ ਤਮੰਨਾ ਖਾਤਰ
ਦੇ ਆਵਾਂਗਾ।

(ਜਸਵੰਤ ਦੀਦ, ਆਵਾਜ਼ ਆਏਗੀ ਅਜੇ)

ਇਥੇ, ਅਸੀਸ ਖਾਤਰ, ਰੋਅਬ ਖਾਤਰ, ਪਾਪ ਹਰਨ ਖਾਤਰ, ਉੱਚਾ ਹੋਣ ਦੀ ਤਮੰਨਾ ਖਾਤਰ ਅਜਿਹੇ ਵੇਰਵੇ ਹਨ, ਜਿਹੜੇ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਅਜਬ ਤਿੜਕੀ ਹੋਈ, ਖੰਡਿਤ ਹੋਈ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਦੀ ਗਲ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ।

ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਪ੍ਰਗਟ ਰੂਪ ਸਜ਼ਾਰ ਦੀ ਚਕਾਚੌਂਧ ਹੈ, ਜਿਸਨੇ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਸੋਚ ਨੂੰ ਉਪਭੋਗੀ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ ਹੈ, ਸੰਵੇਦਨਸ਼ੀਲਤਾ ਤੋਂ ਵਾਂਝਿਆ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ-

ਚਲੋ ਯਾਰੋ!
ਸਹਿਰ ਦੀਆਂ ਸੜਕਾਂ 'ਤੇ ਚਲੀਏ
ਗੋਲ ਗੱਪੇ, ਆਲੂ-ਟਿੱਕੀ, ਚਾਟ ਖਾਂਦੀਆਂ,
ਖੂਬਸੂਰਤ ਇਸਤਰੀਆਂ ਦਾ ਲੁਤਫ ਮਾਣੀਏ
ਇਸ ਸੁਹਾਵਣੇ ਵਿਸ਼ਵ ਨੂੰ ਕੁਝ ਹੋਰ ਜਾਣੀਏ

(ਹਰਵਿੰਦਰ ਭੰਡਾਲ, ਬਾਰੀ ਕੋਹੀ ਦੀਵਾ)

ਇਸੇ ਪ੍ਰਸੰਗ ਵਿਚ ਹੀ ਹਰਮੀਤ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਵੀ ਵਿਚਾਰਨਯੋਗ ਹੈ। ਉਹ ਆਪਣੀ ਪੁਸਤਕ 'ਸਮੁੰਦਰ ਬੁਲਾਉਂਦਾ ਹੈ' ਵਿਚ ਬੰਦ ਕਮਰਿਆਂ ਵਿਚ ਬੈਠ ਕੇ ਬਹਿਸ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਬੁੱਧੀਜੀਵੀਆਂ ਨੂੰ ਮੁਖ਼ਾਤਬ ਹੈ-

ਅਸੀ ਬੰਦ ਕਮਰਿਆਂ 'ਚ ਬੈਠ ਕੇ
ਬਹਿਸ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਨਪੁੰਸਕ ਬੁੱਧੀਜੀਵੀ
ਹਾਲੇ ਵੀ ਸਾਡੀਆਂ ਰਾਤਾਂ ਵਿਚ,
ਇਕ ਵਿਸ਼ਾਲ ਜਨਸਮੂਹ ਚਿੰਘਾੜਦਾ ਹੈ
ਸਾਡੇ ਸੁੱਤੇ ਜਿਹਨ ਨੂੰ ਠਕੋਰਦਾ ਹੈ,
ਅਸੀ ਫਿਰ ਪਾਸਾ ਪਰਤ ਕੇ,
ਸੌ ਜਾਵੇ ਦੇ ਆਦੀ ਹੋ ਗਏ ਹਾਂ

(ਹਰਮੀਤ ਵਿਦਿਆਰਥੀ, ਸਮੁੰਦਰ ਬੁਲਾਉਂਦਾ ਹੈ)

ਨਾਮਵਰ ਸ਼ਾਇਰ ਜਸਵਿੰਦਰ ਵੀ ਆਪਦੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚ ਸਿਰਜਦਾ ਦੇ ਲੋਕ ਪੱਖੀ ਮਹੱਤਵ ਨੂੰ ਦ੍ਰਿੜ ਕਰਦਾ ਹੈ-

ਜੇਕਰ ਹੋਵੇ ਮਚਿਆ
ਪੌਣਾਂ ਵਿਚ ਕੁਹਰਾਮ,
ਹਰਫ਼ਾਂ ਨੂੰ ਨਹੀ ਸੋਭਦਾ
ਸਫ਼ਿਆਂ ਤੇ ਆਰਾਮ

(ਜਸਵਿੰਦਰ, ਕੱਕੀ ਰੇਤ ਦੇ ਵਰਕੇ)

ਪਿਛਲੇ ਦੋ-ਤਿੰਨ ਦਹਾਕਿਆਂ ਤੋਂ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤਕ ਇਕਾਈ 'ਪਿੰਡ' ਸ਼ਹਿਰੀ ਸਭਿਅਤਾ ਦੀ ਮਾਰ ਹੇਠ ਹੈ। ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਣ ਦੇ ਵਿਕਾਸਵਾਦੀ ਸਿਧਾਂਤ ਦੇ ਨਾਹਰੇ ਹੇਠ, ਸਰਕਾਰਾਂ ਪੇਂਡੂ ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਭਾਵੇਂ ਕਿੰਨੇ ਦਾਅਵੇ ਕਰਨ ਪਰ ਅਸਲ ਵਿਚ ਪਿੰਡ ਅਜੇ ਵੀ ਆਪਣੇ ਵਸਨੀਕਾਂ ਨੂੰ ਰੋਟੀ ਦੇਣ ਤੋਂ ਅਸਮਰਥ ਹੈ। ਪਿੰਡਾਂ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਅਜੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਏਜੰਡਾ ਨਹੀ ਹੈ। ਭਾਵੇਂ ਸਾਡੀ

ਬਹੁਤੀ ਵੱਸੋਂ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਹੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਮਹਾਂਨਗਰਾਂ ਦੀ ਸੱਭਿਅਤਾ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਪਿੰਡਾਂ ਦਾ ਪੜ੍ਹਿਆ ਲਿਖਿਆ ਤਬਕਾ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਸਹਿਰਾਂ ਵੱਲ ਦੌੜ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਸਿਰਫ਼ ਪਿੰਡ ਹੀ ਨਹੀ, ਛੋਟੇ ਸ਼ਹਿਰ ਵੀ ਇਸ ਅੰਨੀ ਦੌੜ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹਨ। ਮਹਾਂਨਗਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿਚ ਇਹ ਰੋਜ਼ੀ ਰੋਟੀ ਤਾਂ ਕਮਾ ਰਹੇ ਹਨ ਪਰ ਬਜ਼ੁਰਗ ਪੀੜ੍ਹੀ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ਲਿਜਾ ਸਕਣ ਤੋਂ ਅਸਮਰੱਥ ਹਨ। ਨਤੀਜਤਨ ਬਜ਼ੁਰਗ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਅਤੇ ਛੋਟੇ ਛਹਿਰਾਂ ਅਤੇ ਕਸਬਿਆਂ ਵਿਚ ਤੜਫ ਰਹੇ ਹਨ ਅਤੇ ਮਹਾਂਨਗਰਾਂ ਦੀ ਰਹਿ ਰਹੀ ਔਲਾਦ, ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੇ ਮੋਹ ਦੇ ਹੇਰਵੇ, ਝੂ ਹੇਰਵੇ ਵਿਚ ਗ੍ਰਸੀ ਮਹਾਂਨਗਰੀ ਭੀੜ ਵਿਚ ਗੁਆਚ ਗਈ ਹੈ। ਜੋਗਾ ਸਿੰਘ, ਪਾਤਰ ਅਤੇ ਜਗਤਾਰ ਦੀਆਂ ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਵਿਚ ਇਸ ਸਥਾਨਕ ਪਰਵਾਸ ਦਾ ਹੇਰਵਾ ਹੂਕ ਬਣਕੇ ਪੇਸ਼ ਹੋਇਆ ਹੈ-

ਮੇਰੇ ਪਿੰਡ ਨੂੰ,
ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ,
ਪੇਟ ਵਿਚਲੀ ਭੁੱਖ ਨੇ ਖਾਧਾ
ਜਾਂ
ਦਿਨੋ ਦਿਨ ਪੱਲਰਦੇ
ਮਹਾਂਨਗਰੀ ਸਭਿਆਚਾਰ ਦੇ ਰੁੱਖ ਨੇ ਖਾਧਾ

(ਅਮਰਜੀਤ ਕੌਂਕੇ, ਸਿਮਰਤੀਆਂ ਦੀ ਲਾਲਟੈਨ)

ਸਮਕਾਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਕਵਤਾ ਨੇ ਨਾਰੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚ ਨਵੀ ਚੇਤਨਾ ਪੈਦਾ ਕਰਨ ਵਿਚ ਬੜਾ ਅਹਿਮ ਰੋਲ ਨਿਭਾਇਆ ਹੈ। ਅਮਰੀਕਾ ਵਿਚ ਰਹਿ ਰਹੀ ਪੰਜਾਬੀ ਕਵਿੱਤਰੀ ਸ਼ਸੀ ਸਮੁੰਦਰਾ ਰੈਡੀਕਲ ਨਾਰੀਵਾਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ ਤੋਂ ਇਸਤ੍ਰੀ ਦੀ ਵਿਲੱਖਣ ਜੈਵਿਕ ਅਤੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤਕ ਹੋਂਦ ਨੂੰ ਵੀ ਸਾਹਮਦੇ ਲਿਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਸ਼ਸ਼ੀ ਸਮੁੰਦਰਾ ਦੀ ਔਰਤ ਦੇਹ ਤੋਂ ਪਾਰ ਜਾਕੇ ਰੂਹ ਤਕ ਪ੍ਰਵਾਨਗੀ ਪਾਉਣ ਲਈ ਸੰਦਰਸ਼ਸ਼ੀਲ ਹੈ-

ਰਾਤ ਖਾਵੰਦ ਦੀ ਖੁਸ਼ੀ ਲਈ
ਮੈਂ ਆਪਣੀ ਲਾਸ਼ ਨੂੰ ਚੁੱਕ ਕੇ
ਉਹਦੇ ਨਾਲ ਲਿਟਾਇਆ
ਤੇ ਆਪ
ਬਾਹਰ ਖਾਮੋਸ਼ ਖਲੋਤੇ ਰੁੱਖਾਂ ਦੇ ਗਲ ਲੱਗ
ਰੋਂਦੀ ਰਹੀ, ਰੋਂਦੀ ਰਹੀ...........

(ਸ਼ਸ਼ੀ ਸਮੁੰਦਰਾ, ਬੋਗਨਵਿਲੀਆ ਦੇ ਵਸਤਰ)

ਡਾ. ਵਨੀਤਾ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਦੀਆਂ ਜਰਜਰ ਅਤੇ ਖੋਖਲੀਆਂ ਸੰਸਥਾਵਾਂ, ਜੋ ਔਰਤ ਨੂੰ ਭਾਰ ਅਤੇ ਵਰਤਣ ਦੀ ਸ਼ੈਅ ਸਮਝਦੀਆਂ ਹਨ ਵਲ ਸੰਕੇਤ ਕਰਦੀ ਹੋਈ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ-

ਮੈਨੂੰ ਲੱਗਾ, ਮੈ ਐਸਾ ਚੈਂਕ ਹਾਂ
ਮਾਪਿਆਂ ਨੇ ਸਾਈਨ ਕੀਤਾ
ਤੇ ਸਹੁਰਿਆ ਨੇ ਕੈਸ਼ ਕਰਵਾਲਿਆ
ਇਕ ਦਾ ਭਾਰ
ਦੂਜੇ ਦੀ ਅਮਾਨਤ
ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕੀਮਤੀ ਸੰਦੂਕ
ਤੇ ਮੇਰਾ ਵਜੂਦ ਕਾਗਜ਼ ਵਾਂਗ



Scanned with OKEN Scanner

ਹਸਤਾਖ਼ਰ ਹੋ ਕੇ ਰਸੀਦ ਹੋ ਗਿਆ।

(ਡਾ. ਵਨੀਤਾ, ਮੰਦਰ ਸਪਤਕ)

ਔਰਤ ਦੀ ਲਘੂ ਹੋਂਦ ਬਾਰੇ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਸੁਖਵਿੰਦਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਇਉਂ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਦੀ ਹੈ-

ਮਰਸੀਆ ਮੇਰੇ ਜੰਮਣ ਤੇ ਗਾਇਆ ਗਿਆ,
ਮੈਨੂੰ ਜਿਉਂਦੀ ਨੂੰ ਅੱਗ ਵਿਚ ਜਲਾਇਆ ਗਿਆ
ਕੋਈ ਦੇਵੀ ਬਣਾ, ਕੋਈ ਦਾਸੀ ਬਣਾ
ਹਰ ਕੋਈ ਪਰਖ਼ਦਾ ਮੇਰਾ ਜੇਰਾ ਰਿਹਾ
ਰਹਿਣਾ ਕੰਧਾਂ ਦੇ ਉਹਲੇ ਸਿਖਾਇਆ ਗਿਆ
ਸੋਨੇ ਚਾਂਦੀ ਦੇ ਸੰਗ ਵੀ ਵਰਾਇਆ ਗਿਆ

(ਸੁਖਵਿੰਦਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ, ਚਿਰਾਗਾਂ ਦੀ ਡਾਰ)

ਅਮਰ ਜਿਉਤੀ, ਸੁਰਜੀਤ ਕਲਸੀ, ਮਨਜੀਤ ਟਿਵਾਣਾ, ਸਿਮਰਤ ਗਗਨ, ਨੀਰੂ ਅਸੀਮ ਆਦਿ ਦੀ ਕਵਿਤਰੀਆਂ ਨੇ ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੇ ਇਸ ਦੌਰ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਰੀਵਾਦੀ ਕਾਵਿ ਵਿਚ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਈ ਹੈ। ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਨੇ ਰਾਜਨੀਤੀ ਦੇ ਤਹਿਤ ਔਰਤ ਦੀ ਦੇਹ ਦਾ ਜੋ ਮੰਡੀਕਰਣ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਉਸ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਰੋਧ ਬੜੇ ਭਾਵਕ ਪੱਧਰ ਤੇ ਹੋਇਆ ਹੈ।

ਨਵਤੇਜ ਭਾਰਤੀ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਗਿਆਨ ਅਤੇ ਤਰਕ ਨਾਲ ਆਪਣਾ ਨਾਤਾ ਜੋੜਦੀ ਹੋਈ ਵਰਤਮਾਨ ਆਰਥਿਕ, ਸਮਾਜਿਕ ਆਸਾਵੇਂ ਮਾਨਵੀ ਚਰਿੱਤਰ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਉਹ ਭਾਰਤੀ ਲੋਕਤੰਤਰ ਦੀ ਵਰਤਮਾਨ ਹਕੀਕਤ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਚ ਜਾਤਪਾਤ ਖ਼ਤਮ ਕਰਨ ਦੇ ਸਾਰੇ ਦਾਅਵੇ ਵੋਟਾਂ ਦੀ ਰਾਜਨੀਤੀ ਦੁਆਲੇ ਉੱਸਰਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਇਸਨੂੰ ਸਭਿਅਕ ਚਲਾਕੀ ਕਹਿ ਕੇ ਵਿਅੰਗ ਕਰਦਾ ਹੈ-

ਸਾਡਾ ਮਾਨਵਵਾਦ
ਚੂਹੜੇ ਨੂੰ ਹਰੀਜਨ ਕਹਿਣ ਤਕ ਹੀ ਸੀਮਿਤ ਹੈ
ਇਟ-ਕੇਵਲ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਹੇਰਾ ਫੇਰੀ ਹੈ
ਇਹ ਸਭਿਅਕ ਚਲਾਕੀ ਹੈ
ਅਸੀ ਸੱਭਯ ਹੋ ਗਏ ਹਾਂ
ਵਿਹੜਿਆਂ ਵਿਚੋਂ ਚੂਹੜੇ ਕੱਢਣ ਦੀ ਥਾਂ
ਬੋਲੀ ਵਿਚੋਂ ਚੂਹੜਾ ਸ਼ਬਦ ਕੱਢ ਰਹੇ ਹਾਂ
ਇਹ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਹੈ
ਕਿੰਨੀ ਸੌਖੀ ਹੈ
ਕਿੰਨੀ ਤੁਰਤ ਹੈ
ਕਿੰਨੀ ਸਭਿਅਕ ਹੈ

(ਨਵਤੇਜ ਭਾਰਤੀ, ਲੀਲਾ)

ਸਮਕਾਲੀ ਕਵੀ ਦਲਿਤ ਜੀਵਨ ਦੀ ਵਾਸਤਵਿਕਤਾ ਪੇਸ਼ ਕਰਨ ਲੱਗਿਆ, ਉਹਦੀਆਂ ਤੈਹਾਂ ਖਿੱਦੋ ਵਾਂਗ ਫਰੋਲਦੇ ਦਿੱਸਦੇ ਹਨ-

ਆਪਣਾ ਪਿੰਡ ਉਕੇ ਦਾ ਉਥੇ ਹੀ ਹੈ
ਜਿੱਥੇ ਛੱਡ ਕੇ ਗਿਆ ਸੀ



Scanned with OKEN Scanner

ਸਿਵਾ ਇਸਦੇ ਕਿ ਵੱਡੀ ਬੀਹੀ 'ਚ
ਲੱਗ ਗਈਆਂ ਨੇ ਚਾਰ ਪੱਕੀਆਂ ਇੱਟਾਂ
ਹਾਂ ਮਸੀਤ ਦੀ ਥਾਂ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ ਪੰਚਾਇਤ ਘਰ
ਭਾਵੇਂ ਸਰਪੰਚ ਉਸਨੂੰ ਆਪਣੀ ਜਗੀਰ ਵਾਂਗ ਵਰਤਦਾ ਹੈ
ਉਂਵ ਵਿਹੜੇ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ
ਮੈਂਬਰ ਦੇ ਨਾਂ ਤੇ ਮਿਲ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਚੌਧਰ
ਪਰ ਉਸ ਚੌਧਰੀ ਨੂੰ
ਨਾ ਕੋਈ ਤਿੰਨਾਂ 'ਚ ਗਿਣਾ ਹੈ
ਨਾ ਤੇਰਾਂ 'ਚ ਹੀ ਸਮਝਦਾ ਹੈ
ਹਾਂ ਪਿੰਡ ਦੇ ਮਜ਼ਹਬੀਆਂ ਅਤੇ ਆਦਿ ਧਰਮੀਆਂ ਦੇ
ਕੱਚੇ ਬਨੇਰੇ ਤਾਂ ਪੱਕੇ ਨਹੀ ਹੋਏ

(ਮਦਨਵੀਰਾ, ਭਾਖਿਆ)

ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਆਪਣੇ ਬਦਲਦੇ ਇਤਿਹਾਸਕ ਸੰਦਰਭਾਂ ਦੇ ਨੁਕਤੇ ਤੋਂ ਸਮਕਾਲੀ ਕਵਿਤਾ ਸਮੂਹਿਕ ਚੇਤਨਾ/ਸਮੂਹਿਕ ਆਦਰਸ਼ ਦੀ ਅਣਹੋਂਦ ਵਿਚ ਵਿਲੱਖਣ, ਮੌਲਿਕ, ਵਿਭਿੰਨ ਪ੍ਰਤੀਰੋਧਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਦੀ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚਲਾ ਵਿਅੰਗ ਇਤਨਾ ਪ੍ਰਭਾਵੀ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਨਵੇਂ ਬਣ ਰਹੇ ਸਾਧਨ ਸੰਪੰਨ ਮੱਧਵਰਗੀ ਬੁੱਧੀਜੀਵੀ ਦੀ ਖੰਡਿਤ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਦੇ ਨਵ ਪ੍ਰਸੰਗਾਂ ਨੂੰ ਪਾਠਕ ਸਨਮੁੱਖ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਗਵਾਚੇ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਹਲੂਣਦੀ ਵੀ ਹੈ।



Scanned with OKEN Scanner